Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

संक्रमणशील भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का अध्ययन

मोनिका वर्मा
शोधार्थी
E-Mail:- monikaverma95565@gmail.com

प्रो. अनूप कुमार
प्रौढ़ एवं सतत् शिक्षा विभाग
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

सारांश

*भारतीय समाज वर्तमान समय में तीव्र गति से संक्रमणशील दौर से गुजर रहा है। पारंपरिक मूल्य जो लंबे समय तक सामाजिक जीवन की नींव रहे, अब वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण तकनीकी प्रगति और उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से बदलते नजर आ रहे हैं। इस बदलाव में न केवल सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है बल्कि नैतिक मूल्यों की अवधारणा और उनकी व्यावहारिकता को भी चुनौती दी है। नैतिक मूल्य वे आधारभूत मानक है, जिनसे व्यक्ति और समाज का आचरण नियंत्रित होता है। परिवार, धर्म, शिक्षा, संस्कृति और परंपराएं इन मूल्यों के निर्माण और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किंतु संक्रमणशील समाज में जहां एक ओर पारंपरिक मूल्यों की पकड़ ढीली होती जा रही है, वहीं दूसरी ओर नए मूल्य उभर कर सामने आ रहे हैं। यह स्थिति मूल्य–संघर्ष और नैतिक **द्वन्द** की ओर संकेत करती है। इस शोध पत्र में संक्रमणशील भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की स्थिति, उनकी चुनौतियां, परिवर्तनों और संभावनाओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह देखा गया है कि किस प्रकार नैतिक मूल्य भारतीय समाज की आत्मा रहे हैं और आज भी सामाजिक समरसता, सहयोग और मानवीय गरिमा को बनाए रखने में अपरिहार्य हैं। साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि बदलते समय में इन मूल्यों को परिभाषित होना आवश्यक है, ताकि वे आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप भी हों और अपनी जड़ों से जुड़े रहें।*

संक्रमणशील भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का अध्ययन

भारतीय समाज सदैव से विविधताओं से भरा हुआ समाज रहा है। यह भाषाई, धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विभिन्नताओं का अनोखा संगम मिलता है। इन सभी विविधताओं के बावजूद नैतिक मूल्यों की साझेदारी ने समाज को एकता और स्थायित्व प्रदान किया है। प्राचीन काल से ही सत्य, अहिंसा, करुणा, त्याग, सेवा, धर्म पालन और कर्तव्यपरायणता जैसे मूल्य भारतीय जीवन दर्शन के आधार रहे हैं। इन मूल्यों की जड़े वैदिक साहित्य, उपनिषद, महाकाव्य और धार्मिक परंपराओं में गहराई से बैठी हुई है। किंतु आधुनिक काल में जैसे–जैसे सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं बदलती गई, वैसे–वैसे इन मूल्यों की परिभाषा और प्रासंगिकता पर भी प्रश्न उठने लगे।[1] भारतीय समाज का यह संक्रमणशील स्वरूप

Author:- Monika Verma
Email:- monikaverma95565@gmail.com
Received:- 15 October, 2025
Accepted:- 28 November, 2025.
Available online:- 30 November, 2025
Published by JSSCES, Bareilly
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

औद्योगिकरण, नगरीकरण और वैष्वीकरण की देन है। औद्योगीकरण ने पारंपरिक पेशों और कुटुंब आधारित आर्थिक ढांचे को तोड़ा, वही नगरीकरण ने पारिवारिक संबंधों को शिथिल किया। इससे नैतिक मूल्यों का स्थान भी बदल गया। गांव और संयुक्त परिवार में जहां सामूहिकता और सहयोग प्रमुख नैतिक मूल्य थे, वही शहरों और छोटे परिवारों में व्यक्तिवाद और आत्मकेंद्रीत जीवन शैली ने जगह ले ली। परिणामस्वरुप पारंपरिक नैतिकता और आधुनिक उपयोगितावादी नैतिकता के बीच संघर्ष की स्थिति बनी ।[2] वर्तमान भारतीय समाज में धार्मिक जीवन का भी स्वरूप बदला है। पहले धर्म र्म केवल पूजा पाठ या अनुष्ठान तक सीमित नहीं था बल्कि वह नैतिक आचरण का मार्गदर्शक था। धर्म के उपदेश व्यक्ति को करुणा, दया, सत्य और सयंम की ओर प्रेरित करते थे। किन्तु आज धर्म का स्वरूप अधिकतर प्रदर्शन, पाखंड और औपचारिकता तक सीमित होता जा रहा है। धार्मिक अनुष्ठानों में भव्यता और आडंबर बढ़ गये है। यही कारण है कि धार्मिक गतिविधियां बढ़ाने के बावजूद समाज में नैतिक पतन की चर्चा अधिक सुनाई देती है। धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं नैतिक मूल्यों के संरक्षण की सबसे महत्वपूर्ण वाहक रही हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म में 'धर्म की अवधारणा केवल धार्मिक आस्था नहीं बल्कि नैतिक आचरण का भी प्रतीक है। इसी प्रकार बौद्ध धर्म ने करुणा और अहिंसा को, जैन धर्म ने अपरिग्रह और सत्य को तथा इस्लाम ने भाईचारे और न्याय को जीवन का मूल मंत्र बताया। किंतु संक्रमणशील समाज में धार्मिक परंपराएं भी बदल रही हैं। धर्म का नैतिक पक्ष धीरे–धीरे कमजोर होता जा रहा है और औपचारिकता तथा प्रदर्शन का रूप अधिक सामने आ रहा है। इससे समाज के नैतिक आधार में शिथिलता देखी जा सकती है।[3]

शिक्षा नैतिक मूल्यों के निर्माण और संरक्षण का प्रमुख साधन रही है। प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं था बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिकता का विकास करना भी था। आज शिक्षा का स्वरूप व्यावसायिक और तकनीकी हो गया है। विद्यार्थी रोजगार और प्रतिस्पर्धा की ओर अधिक उन्मुख हैं इससे शिक्षा का नैतिक पक्ष उपेक्षित हो रहा है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा का स्थान अत्यंत सीमित होता जा रहा है, जिसके कारण समाज में नैतिक पतन की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है।[4]

संक्रमणशील भारतीय समाज में परिवार की संरचना भी बदल गई है। संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है। इससे बच्चों के सामाजिक और नैतिक संस्कार प्रभावित हुए हैं। पहले परिवार में दादा–दादी, चाचा चाचा जैसे वरिष्ठ सदस्य बच्चों को नैतिक मूल्य सीखते थे। अब वह भूमिका कमजोर हो गई है। इसके स्थान पर टेलीविजन, सोशल मीडिया और इंटरनेट जैसे आधुनिक साधन बच्चों के संस्कार गढ़ रहे हैं। इनमें नैतिक शिक्षा का अभाव है और अक्सर उपभोक्तावादी

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

एवं भौतिकवादी संस्कृति का प्रभाव अधिक होता है।[5]

नगरीकरण के साथ–साथ व्यक्ति के जीवन शैली में भी परिवर्तन आया है। आधुनिक जीवन में प्रतिस्पर्धा और समय का अभाव इतना बढ़ गया है कि लोग अपने रिश्तों और नैतिक मूल्यों को समय नहीं दे पा रहे हैं नौकरी, व्यापार और करियर की दौड़ में रिश्तों की संवेदनशीलता और नैतिक प्रतिबद्धता पीछे छूट रही है। इससे सामाजिक स्तर पर विष्वास, सहयोग और ईमानदारी जैसे मूल्य संकट में है।[6]

आधुनिक समाज में मीडिया और संचार साधनों ने भी नैतिक मूल्यों को प्रभावित किया है। एक ओर मीडिया ने शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया है, वहीं दूसरी ओर उपभोक्तावादी संस्कृति और तात्कालिक सुख की प्रवृत्ति भी फैलाई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर झूठी खबरें और नकारात्मक प्रवृत्तियां तेजी से फैलती हैं, जो समाज के नैतिक ढांचे को कमजोर करती हैं। विशेषकर युवाओं पर इसका गहरा असर पड़ता है, जो आभासी दुनिया में अधिक समय बिताकर वास्तविक जीवन की नैतिक जिम्मेदारियों से दूर होते जा रहे हैं। टेलीविजन, फ़िल्में और सोशल मीडिया पर प्रस्तुत सामग्री प्रायः भोगवादी और उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देती है। इसका सीधा प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ता है। यह पारंपरिक नैतिक मूल्यों से दूर होकर आधुनिक जीवन शैली और तात्कालिक सुख को ही सर्वोपरि मानने लगते हैं। यद्यपि मीडिया के सकारात्मक पक्ष को भी नकारा नहीं जा सकता, जैसे– मानवाधिकार, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय की चेतना फैलाने में इसकी बड़ी भूमिका रही है। किंतु कुल मिलाकर मीडिया की भूमिका नैतिक मूल्यों के संदर्भ में मिश्रित रही है।[7]

भारतीय समाज के संक्रमणशील स्वरूप को समझने के लिए हमें यह देखना होगा कि नैतिक मूल्य केवल धार्मिक क्रिया और पारिवारिक उपदेशों का परिणाम नहीं होते बल्कि वे आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से भी निर्मित होते हैं। भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद से बाजार और उपभोक्तावाद का प्रभाव इतना गहरा हुआ है कि लोगों के आचरण और प्राथमिकताओं में बुनियादी बदलाव दिखाई देने लगे हैं। पहले जहां व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना और संतोष को सर्वोच्च मानता था वहीं अब अधिक उपभोग, अधिक संपत्ति और अधिक आराम को जीवन की उपलब्धि माना जाने लगा है। इस प्रवर्ती ने नैतिक मूल्यों जैसे संयम, त्याग और संतोष को कमजोर किया है।[8]

भारतीय समाज में राजनीतिक संरचना भी नैतिक मूल्यों के निर्माण और हास् का प्रमुख कारक रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राजनीतिक नैतिक आदर्शों और जन सेवा का माध्यम थी। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा को राजनीति का आधार बनाया और लोगों को सिखाया की राजनीति की आवश्यकता प्राप्ति नहीं बल्कि नैतिकता पर आधारित समाज निर्माण का साधन हो सकती है। लेकिन

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

स्वतंत्रता के बाद धीरे–धीरे राजनीति में अवसरवादिता, जातिवाद और भ्रष्टाचार हावी होने लगे। चुनाव में धनबल और बाहुबल का प्रयोग, नेताओं के नैतिक प्रतिबद्धताओं से विमुक्ता और सत्ता, लालसा ने राजनीति को नैतिकता से दूर कर दिया। परिणामस्वरूप आम जनमानस में यह संदेश गया कि राजनीति और नैतिकता एक दूसरे के विरोधी हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राजनीति का उद्देश्य समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण था, जिसमें सत्य, त्याग और बलिदान को प्राथमिकता दी जाती थी। किंतु वर्तमान राजनीति में स्वास्थ्य, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण और अवसरवादिता हावी हो गई है। इसमें आम जनमानस के सामने राजनीति की नैतिक छवि को धूमिल किया है। जब जनता यह देखी है कि नेतृत्व नैतिक आदर्शों का पालन नहीं कर रहा, तो स्वाभाविक रूप से सामाजिक जीवन में भी नैतिक पतन की प्रवृत्ति फैलती है।[9]

संक्रमणशील समाज में युवा पीढ़ी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवा सबसे अधिक परिवर्तशील और प्रभावशाली वर्ग होता है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता नैतिक मूल्यों की सबसे बड़ी आधारशिला है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक हर क्षेत्र की अपनी विशिष्ट परंपराएं, लोककथाएं और आचार्य संहिताएं रही हैं। इन परंपराओं ने लोगों को सामाजिक समरसता, बड़ों का आदर, अतिथि का सत्कार और सामूहिक सहयोग जैसे मूल्य सिखाये। किंतु संक्रमणशील समाज में इन सांस्कृतिक परंपराओं पर भी वैष्विक प्रभाव पड़ा है। आज युवाओं में पश्चिमी जीवन शैली और फैशन की ओर आकर्षण इतना बढ़ गया है कि वे अपनी लोक संस्कृति और परंपरागत नैतिकता को पीछे छोड़ने लगे हैं। यह स्थिति नैतिक मूल्यों के संरक्षण के लिए चुनौतीपूर्ण है। शिक्षा, रोजगार और करियर के दबाव के साथ–साथ में वैष्विक संस्कृति के भी निकट रहते हैं। एक ओर वे तकनीकी और आधुनिकता को अपनाने में अग्रसर हैं तो दूसरी ओर परंपरागत मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। कई बार इस पीढ़ी में मूल्य संघर्ष तीव्र रूप में दिखता है। उदाहरणस्वरूप, वे आधुनिक जीवन शैली का अनुसरण करना चाहते हैं परंतु परिवार उनसे परंपरागत नैतिकता की अपेक्षा रखता है। यह द्वंद उन्हें भ्रम और असमंजस की स्थिति में डाल देता है।[10]

महिलाओं की सामाजिक स्थिति भी नैतिक मूल्यों के संदर्भ में परिवर्तनशील रही हैं। परंपरागत समाज में महिलाओं से मर्यादा, सहनशीलता और सेवा की अपेक्षा की जाती थी। किंतु आधुनिक समाज में शिक्षा और रोजगार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। अब वे समानता, स्वतंत्रता और सम्मान की मांग कर रही है। इससे नैतिक मूल्यों का नया स्वरूप सामने आया है, जहां लैंगिक समानता और न्याय को प्राथमिकता दी जा रही है। यह परिवर्तन सकारात्मक भी है क्योंकि यह समाज को अधिक मानवीय और न्यायपूर्ण दिशा देता है।[11]

सामाजिक असमानता और जातिगत भेदभाव भी नैतिक मूल्यों को प्रभावित करने वाले

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

प्रमुख कारक हैं। भारतीय समाज में लंबे समय से जाति व्यवस्था ने नैतिकता की परिभाषा को विकृत किया है, ऊंच–नीच, छुआछूत और भेदभाव ने मानवीय गरिमा को ठेस पहुंचाई। हालांकि आधुनिक संविधान और कानून ने समानता और न्याय के नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित किया है, किंतु व्यवहारिक जीवन में यह अभी भी चुनौती बना हुआ है। संक्रमणशील समाज में नैतिकता का अर्थ केवल व्यक्तिगत आचरण नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और सामान्य से भी जुड़ा होना चाहिए।[12]

वैष्वीकरण के प्रभाव ने भारतीय नैतिकता को अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में भी जोड़ा है। आज भारतीय समाज केवल अपनी सीमाओं तक सीमित नहीं है बल्कि पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी, प्रवासी भारतीयों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने जीवन के हर क्षेत्र में नए मानक स्थापित किए है। इस प्रक्रिया में पारंपरिक भारतीय नैतिकता और पश्चिमी उपयोगितावादी नैतिकता का मिश्रण देखने को मिलता है। उदाहरण स्वरूप, कार्यस्थल पर अनुशासन, समय–पालन और दक्षता जैसे मूल्य पश्चिम से आए हैं, जिन्हें भारतीय समाज ने धीरे–धीरे स्वीकार किया है। भारतीय समाज में वैष्वीकरण ने नैतिक मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है। एक ओर वैष्वीकरण ने दुनिया को नजदीक लाकर विचारों, तकनीकों और संस्कृतियों का आदान–प्रदान संभव बनाया, वहीं दूसरी ओर इसने भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा की भावना को भी तेज किया। पहले भारतीय समाज में संतोष, संयम और सादगी नैतिक आदर्श माने जाते थे, लेकिन वैष्विक बाजार ने विलासिता और उपभोग को सफलता का प्रतीक बना दिया। परिणामस्वरुप नैतिकता अब कमाई और प्रदर्शन के मानकों में ढलने लगी है। यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक जीवन की गहराइयों तक पहुंच गया है। अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में से देखा जाए तो भारतीय समाज का नैतिक ढांचा वैष्विक नैतिक विमर्श से भी जुड़ गया है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानव अधिकारों, लैंगिक समानता और सतत विकास के जो मानक स्थापित किए गए हैं, वह भारतीय समाज में नैतिक चेतना को नया आयाम दे रहे है। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि संक्रमणशील समाज केवल पारंपरिक मूल्यों को खोने की प्रक्रिया से नहीं गुजर रहा बल्कि नए वैष्विक नैतिक मानकों को अपनाने की दिशा में भी अग्रसर है।[13]

मानव अधिकारों और लोकतांत्रिक चेतना का विकास भी नैतिक मूल्यों को पुनर्परिभाषित कर रहा है। पहले समाज में समूह और परंपरा की प्राथमिकता अधिक थी, पर अब व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों को भी नैतिक मान्यता दी जा रही है। दलितों, महिलाओं, बच्चों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की चर्चा आधुनिक भारतीय समाज में नैतिक विमर्श का हिस्सा बनी हुई है। इससे यह सिद्ध होता है कि संक्रमणशील समाज केवल मूल्य संकट ही नहीं बल्कि मूल्य विकास की प्रक्रिया से भी गुजर रहा है।[14]

तकनीकी का प्रसार भी नैतिकता पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। इंटरनेट, सोशल

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने न केवल जीवन को सुविधाजनक बनाया है बल्कि नैतिक दुविधाओं को भी जन्म दिया है। गोपनीयता का उल्लंघन, साइबर अपराध, फेक न्यूज़ और ऑनलाइन शोषण जैसी समस्याएं आधुनिक युग की नैतिक चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों ने यह प्रश्न खड़ा किया है कि आधुनिक समाज में नैतिकता की परिभाषा क्या होगी और इसे कैसे लागू किया जाएगा।[15]

सिनेमा और लोकप्रिय संस्कृति ने भी भारतीय समाज के नैतिक ढांचे को प्रभावित किया है। फिल्मों और धारावाहिकों में अक्सर आधुनिक जीवन शैली का चित्र इस प्रकार किया जाता है कि परंपरागत नैतिकता पिछड़ी हुई और आधुनिकता प्रगतिशील लगती है। परिणामस्वरुप युवा दर्शक इस चित्रण से प्रभावित होकर परंपरा को बोझ और आधुनिकता को स्वतंत्रता मानने लगते हैं। हालांकि सकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो लोकप्रिय संस्कृति ने सामाजिक बुराईयो जैसे दहेज, बाल विवाह, लैंगिक असमानता पर भी सवाल उठाएं है। अतः इसका प्रभाव द्वैध है– एक ओर यह नैतिक पतन को बढ़ावा देता है, दूसरी ओर यह नैतिक सुधार की दिशा भी खोलता है।[16]

भारतीय समाज में आर्थिक असमानता नैतिक संकट की एक और जटिल जड़ है। अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई ने सामाजिक रिश्तों और नैतिक दायित्वों को कम किया है। पहले गांव और कस्बों में सहयोग और आपसी मदद की परंपरा प्रबल थी, लेकिन आज शहरी जीवन में आर्थिक अंतर के कारण वर्ग–संघर्ष और सामाजिक ईर्ष्या बढ़ रही है। इस असमानता ने उदारता, करुणा और सहयोग जैसे नैतिक मूल्यों को प्रभावित किया। अमीर वर्ग विलासिता और उपभोग में लिप्त है, जबकि कि गरीब वर्ग हताशा और असुरक्षा से ग्रस्त है। इससे सामाजिक नैतिकता की संतुलित धारा टूटी दिखाई देती है।[17]

धर्मनिरपेक्षता भी संक्रमणशील समाज में नैतिक मूल्यों की परीक्षा ले रही है। भारत एक बहुधार्मिक देश है जहां सहिष्णुता और सहअस्तित्व परंपरागत नैतिकता का हिस्सा रहे हैं लेकिन हाल के दशकों में सांप्रदायिक तनाव और धार्मिक राजनीति के कारण यह नैतिक धारा कमजोर हुई है। धार्मिक पहचान और बहुसंख्यक–अल्पसंख्यक राजनीति में भाईचारे और सहअस्तित्व की नैतिकता को चुनौती दी है। इसके बावजूद भारतीय समाज के भीतर अभी भी एक गहरी इच्छा है कि धर्म को विभाजन का नहीं बल्कि एकता का साधन बनाया जाए। यही कारण है कि विभिन्न सामाजिक आंदोलन और संगठन आज भी धार्मिक सहिष्णुता और नैतिक एकता की पैरवी करते हैं।[18]

नैतिक मूल्य का संकट केवल समाज के बड़े ढांचे तक सीमित नहीं है, यह व्यक्तिगत जीवन में भी गहराई से महसूस किया जा सकता है। आधुनिक जीवन शैली में स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत सफलता की लालसा इतनी प्रबल हो गई है कि लोग अपने संबंधों में नैतिकता की उपेक्षा करने लगे हैं। मित्रता, विवाह और पारिवारिक रिश्तों में विष्वास और

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

प्रतिबद्धता का हास दिखाई देता है। तलाकों की बढ़ती संख्या, वृद्धजनों की उपेक्षा और पारिवारिक विवाद इस संकट के उदाहरण हैं। यह स्थिति बताती है कि नैतिक मूल्य केवल सामाजिक संरचनाओं से ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत व्यवहार से भी प्रभावित होते हैं।[19]

भारत के ग्रामीण समाज में नैतिक मूल्य का स्वरूप शहरी समाज से अलग रहा है। गांव में अब भी सामूहिकता, परंपरा और आपसी सहयोग पर आधारित नैतिकता देखने को मिलती है, लेकिन आधुनिकता की लहर धीरे–धीरे वहां भी पहुंच रही है। मोबाइल फोन, इंटरनेट और रोजगार के अवसरों ने ग्रामीण युवाओं को शहरी की जीवन शैली से जोड़ दिया है। इससे गांव की परंपरागत नैतिकता में भी बदलाव आ रहा है।[20]

पर्यावरणीय संकट भी आधुनिक समाज में नैतिकता का एक नया आयाम प्रस्तुत करता है। औद्योगिकरण और उपभोक्तावाद में प्राकृति के संसाधनों का अंधाधुंध दोहन किया है। वनों की कटाई, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएं अब केवल वैज्ञानिक या तकनीकी नहीं बल्कि नैतिक मुद्दे भी बन गई है। आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी एक नैतिक मूल्य के रूप में सामने आ रही है। भारतीय परंपरा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है, लेकिन आधुनिकता में यह दृष्टि कमजोर हो गई है। अब आवश्यकता है कि पर्यावरणीय नैतिकता को समाज में पुनः स्थापित किया जाए।[21]

संक्रमणशील समाज में रोजगार और आर्थिक प्रति स्पर्धा ने भी नैतिक मूल्यों पर गहरा असर डाला है। पहले व्यवसाय और व्यापार विष्वास और नैतिकता पर आधारित होते थे। व्यापारी अपनी सत्यनिष्ठा और भरोसेमंद व्यवहार के लिए जाने जाते थे। लेकिन अब प्रासंगिकता और लाभ की दौड़ ने व्यापार को पूरी तरह भौतिकवादी और स्वार्थपरक बना दिया है। रिष्वत, धोखाधड़ी, करचोरी और मिलावट खोरी जैसी प्रवृत्तियां नैतिक पतन की स्पष्ट निशानियां है। समाज में यह धारणा बन गई है कि सफलता केवल धन से मापी जाती है, चाहे उसके पीछे कितनी भी अनैतिकता क्यों ना हो।[22]

तकनीकी प्रगति ने भी नैतिक मूल्यों की परिभाषा को बदल दिया। इंटरनेट और स्मार्ट फोन ने जीवन को आसान और सुविधाजनक तो बनाया, लेकिन इसके साथ ही नैतिक संकट भी उत्पन्न किये। गोपनीयता का ह्रास, व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग, साइबर अपराध और ऑनलाइन शोषण ऐसे मुद्दे हैं जो सीधे–सीधे नैतिकता से जुड़े हैं। पहले नैतिक प्रश्न मुख्य रूप से व्यक्तिगत या पारिवारिक आचरण तक सीमित थे, अब वे डिजिटल दुनिया तक फैल गए हैं। इसने नैतिकता को नया आयाम दिया है, जहां तकनीक और आचार संहिता को संतुलित करना आवश्यक हो गया है। आधुनिक उपभोक्तावाद भी नैतिक मूल्यों के लिए बड़ी चुनौती है। विज्ञापन और बाजार संस्कृति ने इच्छाओं को अनंत बन दिया है। पहले लोग जरूरत और संतोष के आधार पर जीवन जीते

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

थे लेकिन अब अधिक से अधिक उपभोग को ही उपलब्धि माना जाने लगा है। यह प्रवृत्ति न केवल आर्थिक संसाधनों को असमान रूप से बांटती है, बल्कि नैतिकता को भी कमजोर करती है, क्योंकि इसमें आत्म, संयम और संतोष की जगह लालच और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलता है।[23]

निष्कर्ष :

संक्रमणशील भारतीय समाज में नैतिक मूल्य का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि परिवर्तनशील परिस्थितियां समाज के प्रत्येक स्तर को प्रभावित कर रही है। पारंपरि के समाज जहां संयुक्त परिवार धार्मिक आस्था, सामूहिकता और त्याग जैसे मूल्यों पर आधारित था, वहीं आधुनिक समाज व्यक्तिगत स्वतंत्रता, उपभोक्तावाद प्रतिस्पर्धा और तकनीकी दक्षता को महत्व देते है। यह परिवर्तन केवल बाहरी नहीं बल्कि गहरे स्तर पर व्यक्ति और समुदाय दोनों के नैतिक जीवन को प्रभावित करता है। एक ओर आधुनिकता ही समानता, लैंगिक न्याय, मानवाधिकार और पर्यावरणीय जिम्मेदारी जैसे नए मूल्यों को जन्म दिया है, जो समाज के लिए सकारात्मक दिशा प्रदान करते है। दूसरी ओर भौतिकवाद, उपभोग की अति, पारिवारिक विघटन और भ्रष्टाचार जैसी प्रवृत्तियां ने नैतिक संकट भी उत्पन्न किया है। इस द्वंद ने स्पष्ट किया है कि भारतीय समाज ना तो पूरी तरह परंपरा को छोड़ सकता है और न ही अंधाधुंध आधुनिकता को स्वीकार कर सकता है उसे इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। नैतिक मूल्यों का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया और धर्म किस दिशा में जाते हैं। यदि यह सभी संस्थाएं केवल तत्कालीक हितों तक सीमित रही तो नैतिकता का क्षरण और तेज होगा। लेकिन यदि इनका उपयोग सकारात्मक मूल्य प्रसार में किया गया तो समाज संतुलन प्राप्त कर सकता है। विशेषकर शिक्षा और युवा पीढ़ी की भूमिका निर्णायक होगी। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी अनुकूलनशीलता रही है। इतिहास गवाह है कि भारत में हर युग में आंतरिक और बाहरी चुनौतियों को स्वीकार किया और उसने अपने नैतिक जीवन को नए सिरे से परिभाषित किया यही परंपरा आज भी समाज को आष्वास करती है कि संक्रमणशीलता के बावजूद नैतिक मूल्य नष्ट नहीं होंगे बल्कि नए रूप में उतरकर समाज को स्थिरता और दिशा प्रदान करेंगे। अतः निष्कर्ष का यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में नैतिक मूल्य संकट व आवश्यक दोनों की स्थिति में है इनका संरक्षण केवल परंपराओं के पुनरावर्तन से नहीं बल्कि आधुनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही संभव है यही संतुलन भारतीय समाज को न केवल वर्तमान में सशक्त बनाएगा बल्कि भविष्य के लिए भी मार्गदर्शन सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आहूजा राम (2015), सामाजिक समस्यायें, जयपुर, रावत प्रकाशन पृष्ठ–45–78
2. देसाई, ए.आर. (2005), भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास, मुंबई, पापुलर प्रकाशन, पृष्ठ–67–123

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

3. शर्मा, आर, परिवर्तनशील भारतीय समाज, विचार और विमर्श, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2012, पृष्ठ–14
4. सिंह, गोपाल (2014), भारतीय शिक्षा और समाज, पटना, आर्य बुक्स, पृष्ठ–173
5. कुमार, योगेश (2020), भारतीय समाज में परिवर्तन, वाराणसी, काशी बुक, पृष्ठ–201
6. शर्मा, रामनाथ (2012), भारतीय समाज का भविष्य, इलाहाबाद, प्रयाग प्रकाशन, पृष्ठ–87,
7. मिश्रा, सतीश (2019), समाज और मीडिया पेज, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ–134,
8. गुप्ता, आर. परिवार, संबंध और बदलती संरचना, फैमिली स्टडीज पब्लिकेशन, 2010, पृष्ठ–154
9. चंद्रा, एस., राजनीति और समाज, नवपरिवर्तन, पोलिटिकल इनसाइट पब्लिशर, पृष्ठ–144
10. कुमार, अजय (2017), युवा और मूल्य बोध, वाराणसी, गंगा पब्लिकेशन हाउस, पृष्ठ–212
11. देसाई, एन. वुमन एंड सोशल एथिक्स, 2010, पृष्ठ–89
12. अंबेडकर, बी.आर. (1948) दृजाति का उन्मूलन, नागपुर, नवयुग प्रकाशन, पृष्ठ–56,
13. राव, एम.एस. (2009), वैश्वीकरण और भारतीय समाज, हैदराबाद : ओरिएंट लॉगमैन, पृष्ठ–210–245
14. आहूजा, राम (2007), सामाजिक समस्याएं, जयपुर रावत प्रकाशन, पृष्ठ–311
15. वर्मा, संदीप (2018), तकनीक और नैतिक मूल्य, भारतीय पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ–145,
16. श्याम सुंदर, सिनेमा और भारतीय समाज, पृष्ठ–187
17. सुनील कुमार, आधुनिक भारत में आर्थिक असमानता, पृष्ठ–211
18. सेन, अमर्त्य (2003), विकास और स्वतंत्रता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ–133–142, नई दिल्ली।
19. अरुण चेरी, धर्म और भारतीय समाज, पृष्ठ–92
20. देसाई, ए.आर. ग्रामीण भारत का समाजशास्त्र, मुंबई पापुलर प्रकाशन, पृष्ठ–188
21. नारायण सुनीता, पर्यावरण और विकास, नई दिल्ली सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (2018)
22. शर्मा, रामनाथ, भारतीय समाज का भविष्य, इलाहाबाद, प्रयाग प्रकाशन, 2012, पृष्ठ–121,
23. वर्मा, संदीप, तकनीकी और नैतिक मूल्य, दिल्ली भारतीय पब्लिकेशन (2018), पृष्ठ–45–67